डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2012 : मूल्य - पाँच रुपय

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष : दसवां | अंक : पाँचवां | सितम्बर-2012

5
अज शुभ दिहाड़ा ऐ
(एक शब्द)

9
मुक्ति
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी, हैदराबाद

17
सवाल-जवाब
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

29
आज खुशी दिन आया
(एक शब्द)

30
नाम का जहाज
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश)

34
धन्य अजायब
(सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर, सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस. वाया - मुकलावा, रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन-099 50 55 66 71, 098 71 50 19 99

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-099 28 92 53 04 **उप सम्पादिका** : नंदिनी

अनुवादक : मास्टर प्रताप सिंह

सहयोग : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in (126) Website : www.ajaibbani.org

अज शुभ दिहाड़ा ऐ

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, (2)

1. जग औजड़ उलझे नूं, जग भुल्ले भटके नूं,
जग वहमां जकड़े नूं, जग थिड़के अटके नूं, (2)
बाणी उपदेश सुणा, गुरां राहे पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

2. कुझ नूर दियां गल्लां, कुझ दूर दियां गल्लां,
होठां ते थिरकन एयों, ज्यों सागर दियां छल्लां, (2)
कुझ लंघे वक्त दियां, कुझ ऐस्से वक्त दियां,
कुझ अगले वक्त दियां, गल्लां कैह–कैह गुज्जियां,
दिल टुंब जगाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

3. इस फ़ानी दुनियां चों, जो पुज्ज प्यारा ऐ,
जो वस है लालच दे, बेचमक सितारा ऐ, (2)
इस जग हनेरे चों, पापां दे डेरे चों,
ओहदे ते ऐहदे चों, तेरे ते मेरे चों,
सच्चे ते झूठे दा, जिस भेद मिटाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

4. जो इस राहे आवे, जो इस राहे जावे,
नरकां दा भागी वी, स्वर्गां दी शह पावे, (2)
ऐह अपनी खेती ऐ, ऐहनूं जेहड़ा करदा ऐ,
अगेती या पछेती ऐ, ना भुक्खा मरदा ऐ,
इस राहे हर पापी, टुर भगत कहाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

5. *ना विच मसीत मिले, ना विच मंदिर प्रभु,*
ना विच उजाड़ां दे, है सब अंदर प्रभु, (2)
ऐन्हां बाहरी अक्खियां नूं, जद बंद कर लैंदे हां,
गुरुआं दी सिखया दा, सिमरन कर लैंदे हां,
गुरुआं इस राहे पा, रब आप मिलाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

6. *बूँदा दे ओहले चों , बदलां दे ओहले चों,*
कक्करां ते स्यालां चों, गर्मी दे शोले चों, (2)
गुरुआं दी कृपा ने, गुरुआं दी बाणी ने,
गुरुआं दे वाकां ने, लक्ख पापी कढे ने,
जीन्नां ने गुरुआं दा, इक नाम ध्याया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

7. *'अजायब' दी टेक ऐहो, कृपाल दे लग सेवे,*
विच रज़ा दे रह राज़ी, प्रभु जो वी दे देवे, (2)
ऐह रस्ता है तेरा, इस तों जे भटकेंगा,
औजड़ विच पै जाऐंगा, जिल्लत विच अटकेंगा,
जिस गुरु भुलाया ऐ, उस सुख ना पाया ऐ,
अज शुभ दिहाड़ा ऐ .....

वह बड़ा सुहावना समय था जब प्रभु मेरी जिंदगी में वह समय लाया, यह शब्द मैंने अपने गुरुदेव के सामने मिलाप के समय बोला था।

मैं बताया करता हूँ कि गुरु अपने सामने अपनी तारीफ नहीं करने देता लेकिन जो अंदर जाते हैं उनके लिए यह एक जरिया होता है कि वे शब्दों के जरिए गुरु की तारीफ करें, अपने दिल की तस्वीर उसके सामने रखे कि हम तेरे सामने कितने छोटे, कितने गरीब या कितने नादान है। तेरे दर पर आए हैं तू हमें रख।

यह शब्द दिल की तस्वीर बताता है कि जिन्होंने गुरु को भुला दिया उन्होंने न कभी सुख पाया है और न कभी सुख पा ही सकते हैं। आदि-जुगादि से 'नाम' का रास्ता चला आ रहा है। गुरु हमें इसी रास्ते पर डालते हैं। प्रभु न किसी मस्जिद में है और न ही किसी मन्दिर में है, प्रभु तो सबके अंदर है।

वह बहुत अच्छा शुभदिन था। मैं आज भी तरस रहा हूँ कि प्रभु परमात्मा कृपाल जो कभी हमारे बीच में आकर रहा था वह आज भी आए तो मैं आपके आगे शब्द बोलकर अपने दिल का बलबला निकालूँ। गुरबानी में आता हैः

सब अवगुण मैं गुण नहीं कोई, क्यों कर कंत मिलावा होई।
ना मैं रूप ना बांके नैणा, ना कुल ढंग ना मीठे वैणा।
हम अवगुण भरे एक गुण नाही, अमृत छाड़ बिखे बिख खाही।
माया मोह भरम भय भूले, सुत दारा स्यों प्रीत लगाई।
एक उत्तम पंथ सुणयों गुरु संगत, तहं मिलत यम त्रास मिटाई।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''प्रभु मन्दिर मस्जिदों में नहीं बसता प्रभु हमारे दिलों में बसता है। सच्चे से सच्चा मन्दिर हमारा शरीर है क्योंकि यह शरीर भगवान ने खुद बनाया है।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

असीं मैले सतगुरु जी, ऊजल कर दे ऊजद कर दे।
हम मैले तुम ऊजल करते, हम निर्गुण तू दाता।
तुम भला करो हम भलो ना जाने, तू सदा सदा दयाला।
तुम निधान अटल सुलतान, जीआ जंत सब जांचे।।

हे सतगुरु! तू सदा हमारा भला ही करता है लेकिन हम तेरी भलाई को भूल जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी अपनी बीमारी के दिनों में पाठी से यह शब्द सुना करते थेः

गुरु मैं गुनाहगार अति भारी। गुरु मैं गुनाहगार अति भारी।
काम क्रोध और छल चतुराई। इन संग है मेरी यारी।
लोभ मोह अहंकार ईर्षा। मान बड़ाई धारी।
कपटी लम्पट झूठा हिंसक। अस अस पाप करा री।।

स्वामी जी महाराज की बानी में इस शब्द को बहुत ही नम्रतापूर्वक लिखा हुआ है कि हमारे अंदर क्या कमियाँ हैं? हम कामी, क्रोधी, कपटी हैं, भोगी हैं अगर हम अंदर से इन चीजों को अंगिकार कर लें तो वह सदा ही तारने के लिए आता है उसके लिए हमें तारना आसान हो जाता है लेकिन हम अपनी गलती को नहीं मानते। महाराज सावन कहा करते थे, ''अगर हम गलती करके गलती नहीं मानते तो हम एक और गलती कर रहे होते हैं।''

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मुक्ति

वारां - भाई गुरदास जी

हैदराबाद

जड़ी बूटी जे जीवीऐ किउ मरै धनंतरु।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं कि **मुक्ति** नाम में हैं। हम नाम को उन पूर्ण सतगुरुओं से ही पा सकते हैं जिन्होंने अपने आपको नाम का रूप बना लिया है। नाम न लिखने में आता है और न

बोलने में आता है। नाम ही सच्चा है; नाम पाकर ही हम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

भाई गुरदास फरमाते हैं कि जब आत्मा माता के गर्भ में प्रवेश करती है तभी इसकी मृत्यु का वक्त तय हो जाता है। हमें उसी तय वक्त पर यह संसार छोड़ना पड़ता है। गुरुओं के कहने का मतलब यह नहीं है कि हमें दवाई नहीं लेनी चाहिए या ईलाज नहीं करवाना चाहिए। अगर हम दवाईयों से उम्र बढ़ा सकते या परमात्मा को पा सकते तो धनवंतरी और लुकमान जैसे महान वैद्य, हकीम जोकि दवाईयों के माहिर माने जाते थे; वे अपनी उम्र को लम्बा कर सकते थे परमात्मा को पा सकते थे। कबीर साहब कहते हैंः

वैदि कहे होंहि भला दारु मेरे वसु।
ये वसतु गोपाल की जब चाहे ले खसु।।

भाई गुरदास कहते हैं अगर हम बीमार हो जाएं तो किसी अच्छे हकीम से दवाई लेने में कोई हर्ज नहीं लेकिन यह सोचना कि दवाई से हम अमर हो जाएंगे या परमात्मा को पा लेंगे यह बहुत बड़ी गलतफहमी है। दवाईयां और जड़ी-बूटियाँ आपको परमात्मा के पास नहीं ले जाएंगी।

तंतु मंतु बाजीगरां ओइ भवहि दिसंतरु।

आप आगे फरमाते हैं कि अमरता की अवस्था जादू-टोने, मंत्रो-तंत्रो से प्राप्त नहीं हो सकती ऐसा करके हम बाहर संसार में ही भटकते रहेंगे। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके ही परमात्मा को पा सकते है।

रुखीं बिरखीं पाईऐ कासट बैसतंरु।

आप प्यार से फरमाते हैं कि हम पेड़ों पर उलटा लटकने से मुक्ति नहीं पा सकते, संसार के दुःखों से छुटकारा नहीं पा सकते? पेड़ भी लकड़ी होता है और यह भी आग से मुक्त नहीं होता। आग इसे भी जला देती है। जो स्वयं आग से मुक्त नहीं वह हमें आग से कैसे मुक्त कर देगा?

मिलै न वीराराधु करि ठग चोर न अंतरु।

भाई गुरदास कहते हैं कि बहुत से लोग भूत-प्रेतों की पूजा करते हैं। चोरों और ठगों में कोई अंतर नहीं होता। चोर धन की चोरी करता है और ठग भी आपके धन को ठगता है। भूत-प्रेत भी आपके धन की चोरी करते हैं क्योंकि आप उनके भक्त हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''भूत के जामें में बहुत तकलीफ होती है। भूतों-प्रेतों की भक्ति करके हम परमात्मा के घर वापिस नहीं जा सकते; मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।''

मिलै न राती जागिआँ अपराध भवंतरु।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जिन लोगों को नाम नहीं मिला होता वे नामदान प्राप्त किए हुए सतसंगियों की नकल करते हैं। सारी रात जागने की कोशिश करते हैं जिस तरह चोर, अपराधी रात को जागते हैं क्योंकि रात को उनके धंधे का समय होता है। जो प्रेमी रात को जागते हैं लेकिन भजन-अभ्यास नहीं करते तो उनमें और चोरों में क्या अंतर है?

विणु गुर मुकति न होवई गुरमुखि अमरंतरु।।

भाई गुरदास कहते हैं कि नाम के बिना मुक्ति नहीं है और गुरु के बिना नाम नहीं मिलता है। गुरु नाम की कमाई करके नाम

का रूप हो जाते हैं, नाम में समा जाते हैं अगर हम उनसे प्यार करेंगे तो हम भी अमर अवस्था को पा लेंगे।

घंटु घड़ाइआ चूहिआँ गलि बिली पाईऐ।
मता मताइआ मखीआँ घिअ अंदरि नाईऐ।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं कि नालायक लोग परमात्मा की भक्ति नहीं करते। लायक लोग परमात्मा की भक्ति करते हैं गुरुओं की शिक्षाओं पर अमल करते हैं।

भाई गुरदास जी प्यार से समझाते हैं कि कुछ चूहों ने इकट्ठे होकर मता पकाया कि वे एक घंटी लाकर बिल्ली के गले में बाँध देंगे ताकि उन्हें बिल्ली के आने का पता चल सके लेकिन किसी में भी बिल्ली के गले में घंटी बाँधने की हिम्मत नहीं थी। इसी तरह मक्खियाँ घी में नहाना चाहती है लेकिन ऐसा कैसे संभव है?

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि संसार के आनन्द को भोगते हुए कोई भी परमात्मा को नहीं पा सकता। इंसान को मेहनत करनी पड़ती है तभी वह मुक्ति के लायक बनता है।

सूतकु लहै न कीड़िआँ किउ झथु लंघाईऐ।
सावणि रहण भंबीरीआँ जे पारि वसाईऐ।
कूँजड़ीआँ वैसाख विचि जिउ जूह पराईऐ।
विणु गुर मुकति न होवई फिरि आईऐ जाईऐ।।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि चींटियों का सूतक कभी खत्म नहीं होता क्योंकि वे सदा मरती रहती हैं। सावन के महीने में पतंगे रोशनी में मरते रहते हैं वे रात को पैदा होते हैं और दिन में मर जाते हैं, वे एक दिन से ज्यादा जीवित नहीं रहते। कूंज गर्मी के

महीनों में मैदान में नहीं रह सकती, वे पहाड़ो की और लौट जाती हैं क्योंकि वे मैदान की गर्मी को सहन नहीं कर सकती। इसी तरह जब तक कोई पूर्ण सतगुरु के पास जाकर नाम की कमाई नहीं करता तब तक वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

पाखंडी चाहे कितनी ही कोशिश करें वे भक्ति नहीं कर सकते। वे नाम की कमाई वाले की तरह नहीं बन सकते। चाहे उनको मानने वाले बहुत से लोग होते हैं लेकिन वे कभी परमात्मा के दरबार में नहीं पहुँच सकते। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

चूहा खड्ड न मावई तिक्कल बंधा छज।

इसी तरह जिन लोगों को मुक्ति प्राप्त नहीं हुई होती वे अपने मानने वालों को कैसे पार कर सकते हैं?

प्यारेयो! महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। परमात्मा से जुड़ा ही आपको परमात्मा से जोड़ सकता है। नाम देना और परमात्मा से जोड़ने का कार्य मजाक नहीं। जिसे यह कार्य दिया होता है वही आत्माओं को परमात्मा से जोड़ सकता है।''

आज हम जिन महात्माओं की बानी गाते हैं, आप उनका इतिहास पढ़े तो आपको पता चलेगा कि उन्होंने अपनी जिंदगी में कितनी मेहनत की होती है, कितनी भूख-प्यास काटी होती है और रातें जागी होती है। जिन्होंने कुर्बानी की होती है, वे ही हमें समझा और सिखा सकते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप इस बात से प्रभावित न हों कि किस गुरु के कितने चेले हैं? आप किसी स्कूल की बड़ी-बड़ी इमारते न देखें अगर आप देखते हैं कि इस स्कूल की इमारत

बहुत बड़ी है और बहुत से बच्चे पढ़ते हैं लेकिन आपको यह देखना है कि किस स्कूल के ज्यादा बच्चे पास होते हैं। उसी तरह किसी गुरु के पास जाने से पहले आपको उसकी जिंदगी के बारे में जानना चाहिए कि उसने भजन किया है या नहीं? उसने भजन-अभ्यास में मेहनत की है या वह खुद ही गुरु बन गया है।''

महाराज कृपाल यह भी कहा करते थे, ''किताबें मन और बुद्धि से लिखी जाती हैं। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि जिस आदमी ने इतनी किताबें लिखी हैं हमें उसे मानना चाहिए चाहे आपने भी बहुत सी किताबें लिखी थी फिर भी आप यह कहा करते थे कि किताबें और ग्रंथ भी इंसानी शरीर से निकले हैं। यह छः फुट का शरीर ही किताबों का लेखक है इसलिए आपको इस शरीर के अंदर जाकर इस छः फुट की किताब को पढ़ना चाहिए।''

जे खुथी बिंडा बहै किउ होइ बजाजु।
कुते गल वासणी न सराफी साजु।
रतनमणी गलि बाँदरै जउहरी नहि काजु।
गदहुँ चंदन लदीऐ नहिं गांधी गाजु।

आप कहते हैं कि वर्षा ऋतु का बिंडा(कीड़ा) कपड़े पर बैठ जाए तो वह कपड़े का व्यापारी नहीं बन सकता। कुत्ते के गले में रूपये की थैली लटका दें तो वह महाजन नहीं बन सकता। बंदर के गले में रत्न और मणियाँ बाँध देने से वह जौहरी नहीं बन सकता। गधा अपनी पीठ पर चंदन लादने से चंदन का व्यापारी नहीं बन सकता।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर कोई गुरमत की थ्योरी समझाने लग जाए तो वह गुरु नहीं बन सकता क्योंकि उसने खुद गुरुमत की शिक्षाओं पर अमल नहीं किया होता।''

अंडणि पुतु गावाँढणी कूड़ावा माणु।
पाणी चउणा चारदा घर वितु न जाणु।
बदरा सिरि वेगारीऐ निरधनु हैराणु।
जिउ करि राखा खेत विचि नाही किरसाणु।
पर घरु जाणै आपणा मूरखु मिहमाणु।
अणहोंदा आपु गणइंदा होहु वडा अजाणु।।

अब भाई गुरदास जी पाखंडियों के बारे में समझा रहे हैं कि जो खुद भजन नहीं करते और दूसरों को भजन करना सिखाते हैं यह सब बेकार है। पाखंडी गुरु आपको कहीं नहीं ले जाएगा अगर आपने खुद शादी नहीं करवाई और दूसरों की शादियों के गीत गाते रहे इससे आपको खुशी कैसे मिलेगी?

आप आगे फरमाते हैं कि किसी दूसरे का बेटा आपके घर आ जाए और आप अपने बेटे की तरह उसकी देखभाल करने लग जाएं तो वह आपका बेटा नहीं बन जाएगा। अगर नौकर किसी की चीज़ों की देखभाल करने लग जाए तो वह उन चीज़ों का मालिक नहीं बन जाएगा। अगर कोई किसी का सामान उठाकर ले जा रहा है तो वह उस सामान का मालिक नहीं बन जाएगा। उसी तरह अगर आप नाम की कमाई नहीं करते, आपके अंदर नाम प्रकट नहीं हुआ और आप नामदान देने वाला गुरु होने का दावा करते हैं तो यह पाखंड है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

कहु नानक ते असल खर जे बिनु गुण गरब करन्त।

कीड़ी वाक न थंमीऐ हसती दा भारु।

अब आप कहते हैं कि चींटी हाथी का बोझ नहीं उठा सकती। जो खुद कमाई करता है वह परमात्मा की दया के लायक होता है।

हथ मरोड़े मखु किउ होवै सींह मारु।
मछरु डंगु न पुजई बिसीअरु बुरिआरु।

अब आप फरमाते हैं कि जो हाथ से मक्खी मारता है उसे शेर को मारने वाला नहीं कह सकते। अगर मच्छर काटता है तो उसकी तुलना जहरीले नाग के डंक से नहीं की जा सकती है।

चित्रे लख मकउड़िआँ किउ होइ सिकारु।
जे जूह सउड़ी संजरी राजा न भतारु।
अणहोंदा आपु गणाइँदा उहु वडा गवारु।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं कि लाखों कीड़े-मकोड़े मिलकर भी चीते का शिकार नहीं कर सकते। जिसके कंबल में लाखों जुएं हों अगर वह देश का प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बनना चाहे तो यह संभव नहीं है क्योंकि जब वह अपने कंबल से जुंए ही नहीं निकाल सकता तो वह लोगों की रक्षा कैसे कर सकता है? जो अपने शरीर के नौं द्वारों से ऊपर उठकर तीसरे तिल तक नहीं पहुँचा वह दूसरे लोगों को कैसे मन के जाल से छुड़वा सकता है? ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *बाबाजी! मैं जीते जी मरने के ख्याल से डरती हूँ?*

बाबा जी: हर प्राणी की जिंदगी में मौत का दिन जरूर आता है। चाहे आप डरें चाहे खुश हों यह वक्त जरूर आएगा। जब जीव माता के पेट में प्रवेश करता है मौत का दिन उस समय ही मुकर्रर हो जाता है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कमजोर आदमी ही मौत से डरता है। सतसंगी को मौत का डर नहीं होना चाहिए क्योंकि सतसंगी मर नहीं रहे होते सच्चाई यह है कि वे गुरु परमात्मा के घर में जीने का सामान बना रहे होते हैं। वे मौत के बाद जरूर जीवित होते हैं उनके पास गुरु आता है।

स्वामी जी के समय आगरा में एक बाप-बेटा सतसंगी थे। उस समय हिन्दुस्तान में प्लेग की बीमारी काफी फैली हुई थी, बहुत लोग मर रहे थे। जब लड़का मरने लगा तो उसका बाप रोने लगा। लड़के ने कहा, ''पिताजी! आप क्यों रो रहे हैं?'' पिता ने कहा, ''तू मेरा एक ही लड़का है और तू मर रहा है।'' लड़के ने कहा, ''मैं मर नहीं रहा मैं तो जी रहा हूँ। पिछले जन्म में मैं कीकर का पेड़ था। किसी ने मेरी दातुन बनाकर स्वामी जी की सेवा में दे दी। मैं स्वामी जी की रसना पर आया इसलिए मेरा जन्म इंसान का हुआ। पिछले जन्म में मेरी जड़ योनि थी इसलिए इस जन्म में मेरी जड़ बुद्धि रही; मैं अब जीने लगा हूँ मर नहीं रहा। यह सब स्वामी जी महाराज की दया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कायदा यह है अगर सन्त किसी पेड़ का फल खा लें, किसी जानवर की सवारी कर लें;

कोई पक्षी उनसे टकरा कर मर जाए या उनके ऊपर से भी गुजर जाए तो उसे इंसानी जामा मिलता है।''

महाराज सावन सिंह जी अमृतसर में अपनी कोठी बनवा रहे थे, वहाँ एक आम का पेड़ था। आपने सोचा कि इस पेड़ को कटवा दिया जाए। जब उस पेड़ को काटने लगे तो जो लड़की आपका खाना तैयार करती थी उसने विनती की, ''महाराज जी! यह पेड़ संगत को छाया देता है, बहुत सुंदर लगता है आप इसे न कटवाएं।'' महाराज सावन ने कहा, ''काको! हम इसे सुंदर ही बनाएगें सन्तों की नज़र इस पेड़ पर पड़ गई है इसे इंसानी जामा ही दिया जाएगा।''

आपका एक भरोसे वाला सेवक ईश्वर सिंह था। उसका कोई बच्चा नहीं था। उसने महाराज जी से विनती की, ''अगर आप इस पेड़ को इंसानी जामा दे रहे हैं तो यह मेरे घर में लड़के के रूप में पैदा हो।'' महाराज जी ने कहा, ''अच्छा भाई! जो बाबाजी को मंजूर होगा क्योंकि सन्त अपने आपको क्रेडिट नहीं देते।''

दस महीने बाद ईश्वर सिंह के घर में लड़का पैदा हुआ। जब उस लड़के का नाम रखवाने के लिए महाराज सावन के पास लेकर आए तो महाराज सावन सिंह ने उस लड़की को बुलाया और कहा, ''काको! यह पेड़ की योनि में सुंदर लग रहा था या आज सुंदर लग रहा है?'' महाराज जी ने उस लड़के का नाम आम ही रखा।

मेरी जिन्दगी की एक घटना है। हमारे राजस्थान में एक गाँव लादूवाला है। उस गाँव के बाहर खेत में एक कीकर का बहुत बड़ा पेड़ था। मैं वहाँ कुछ महीनों तक जाता रहा। वहाँ कुछ आदमी मेरे पास आते थे और हम सब अभ्यास करते थे। यह फकीरों की मौज होती है कि कहाँ बैठकर अभ्यास करना है और किससे अभ्यास करवाना है। एक दिन कुछ आदमी बैठे-बैठे कहने लगे कि बाबाजी!

आप इस पेड़ के नीचे बैठते हैं क्या इस पेड़ को कुछ फायदा होगा? मैंने कहा, ''हाँ! इसे फायदा होगा इसे इंसानी जामा जरूर मिलेगा।''

उसी दिन शाम तक वह कीकर का पेड़ खड़ा-खड़ा बिल्कुल सूख गया। अगले दिन उन्होंने उस पेड़ को काट दिया। कई दिन उस कीकर के पेड़ को ट्रेक्टर पर ढोया उस कीकर के पेड़ ने लंगर में बहुत काम दिया। उनका कोई बच्चा नहीं था। वह कीकर का पेड़ लड़की के रूप में उनके घर आई उसका नाम कीकर रखा गया। सतसंगी को मौत से नहीं डरना चाहिए बल्कि इतनी खुशी होनी चाहिए जितनी जिन्दगी में इंसान को शादी के समय खुशी होती है। मैंने कई कमाई वालों की मौत के समय काफी वाक्यात देखे हैं। उन्हें देह छोड़ते समय बहुत खुशी होती है शायद शादी से भी ज्यादा! कबीर साहब कहते हैं:

जेह मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द, मरने ही ते पाईऐ पूर्ण परमानन्द।

सतसंगी को भजन करना चाहिए। जब हम भजन-सिमरन से दूर हो जाते हैं उस समय हमारे मन के अंदर ऐसे सवाल ऐसी कमजोरियाँ आती हैं। समय आने पर आपको महाराज सावन के सेवक सुंदरदास की बहुत सी कहानियाँ पढ़ने को मिलेगी।

सुन्दरदास मेरे पास बीस साल रहा। जब उसका अन्त समय आया उस समय वह बहुत खुश था। मरने से दो घंटे पहले उसने कहा कि प्रसाद करो खुशी मनाओ मैं जा रहा हूँ। परमपिता सावन-कृपाल मुझे लेने आए हैं। ऐसे सतसंगी जिन्हें नाम पर गुरु पर भरोसा है क्या वे मरने से डरेंगे? वे कभी नहीं डरेंगे।

अमृतसर की एक लड़की को महाराज सावन सिंह जी से नाम मिला हुआ था। उस मौहल्ले के लोग हमेशा महाराज सावन सिंह

जी की आलोचना किया करते थे। उस लड़की ने आठ दिन पहले ही बता दिया कि मैंने फलाने दिन चले जाना है। आलोचना करने वाले कहने लगे क्या यह लड़की योगी है जो ऐसी बात कर रही है? वे लोग दिन गिनने लगे आखिर वह दिन आ गया। उस लड़की ने समय पर चोला छोड़ दिया तो सबको भरोसा आ गया।

जब महाराज सावन सतसंग देने अमृतसर गए तो वहाँ सारा मौहल्ला ही 'नाम' लेने के लिए तैयार हो गया। महाराज जी ने उन लोगों से कहा, ''आप लोग अच्छी तरह पक्के हो जाएं मैं फिर आपको नाम दूँगा।'' हमें अभ्यास करना चाहिए। मौत के बारे में नहीं सोचना चाहिए। 'नाम' मोह को खत्म कर देता है। सतसंगी के दिल में तीव्र इच्छा होती है कि अब मेरा मिलाप गुरु से होगा अगर हमारी कमाई अच्छी है तो गुरु हमें जरूर दो-चार दिन पहले चेतावनी देता है कि मैं इस समय आकर ले जाऊँगा।

एक प्रेमीः *मुझे अपने गुरु कृपाल से मिलने का सौभग्य प्राप्त हुआ है। मैं जब हिन्दुस्तान में हूँ तो उनकी गैर मौजूदगी महसूस कर रही हूँ। मेरे दिल में उनके लिए जो प्यार है क्या उस प्यार को उनके रूहानी उत्तराधिकारी सन्त अजायब जी की तरफ लगा दूँ तो कोई बेवफाई तो नहीं होगी?*

बाबा जीः हमें हमेशा उन सन्त-सतगुरुओं का ध्यान करना चाहिए जिन्होंने हमें नाम दिया है। मैं आपको परम पिता कृपाल का प्यार ही दे रहा हूँ अगर आप इस प्यार को प्राप्त कर लेंगे तो इसमें कोई हर्ज नहीं क्योंकि मैं आपको कृपाल के साथ ही जोड़ रहा हूँ। सन्त दो नहीं एक ही रूप होते हैं। उनका एक ही देश है। वे एक ही शब्द में से आते हैं उसी शब्द का प्रचार करते हैं। सच्चाई तो यह है कि हम जब तक बाहर बैठे हैं तब तक वे हमें दो नजर

आते हैं। जब हम अंदर जाएंगे तो दो का सवाल खत्म हो जाएगा और एक ही रह जाएगा।

एक प्रेमी: *जब आप शमस आश्रम अमेरिका में जाएंगे उस समय मौसम अच्छा होना चाहिए लेकिन शुरुआत होने की वजह से मौसम खराब भी हो सकता है तो हमें कैसे मौसम की तैयारी करके जाना चाहिए?*

बाबा जी: हमें दोनों चीज़ों की उम्मीद रखकर इन्तजाम करना चाहिए और नतीजा अपने सतगुरु पर छोड़ देना चाहिए। मौहम्मद साहब ऊँटो का व्यापार किया करते थे, उन्होंने काफी ऊँट रखे हुऐ थे। उनका एक सेवक रोज ऊँटो की टाँगों को मलहम लगाकर बाँधता था, ऊँटो की अच्छी सेवा करता था।

एक दिन मौहम्मद साहब अपने सेवकों को सतसंग सुना रहे थे कि सब कुछ अल्लाह ताला करता है। सब कुछ उसके हुक्म में होता है। उसके हुक्म के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। हम कमजोर जीव बातों को पकड़ लेते हैं। उस सेवक के दिमाग में बात आई कि जब सब कुछ अल्लाह ताला करता है तो मुझे ऊँटों को मलहम लगाने की क्या जरूरत है? उस सेवक ने मौहम्मद साहब से कहा कि जब सब कुछ अल्लाह ताला करता है तो मुझे ऊँटों की सेवा करने की क्या जरूरत है? मौहम्मद साहब ने कहाः

उद्यम करेंदया आवे हार, ते जाणिऐं भाणां करतार।

तेरा काम ऊँटों को मलहम लगाना और उनकी रखवाली करना है नतीजा अल्लाह ताला पर छोड़ देना चाहिए कि उसे क्या मंजूर है? इसी तरह आपको भी दोनों मौसमों को आँखों के आगे रखते हुए अपना इन्तजाम करना चाहिए।

आप लोग जब राजस्थान आते हैं रास्ते में बस पक्की सड़क से उतरकर कच्ची सड़क से आती है। हम उस सड़क को हर महीने ठीक करते हैं उसकी देखभाल करते हैं। अगर उस सड़क की देखभाल न करें तो बस सही सलामत आश्रम नहीं पहुँच सकती जिससे आप लोगों को बड़ी परेशानी हो सकती है लेकिन हम लोग अपनी जिम्मेवारी समझते हुए उस रास्ते की पूरी देखभाल करते हैं फिर उसका नतीजा परमपिता कृपाल पर छोड़ देते हैं क्योंकि उनके सहारे और मदद के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते।

इसलिए आप लोगों ने अपनी जिम्मेवारी समझते हुए काम करना है। मैं आशा करता हूँ कि आप सतगुरु के पहलवान बनकर गुरु पर आसरा रखकर अपना इंतजाम मजबूती से करेंगे ताकि संगत को कोई मुश्किल पेश न आए और ज्यादा से ज्यादा संगत वहाँ पहुँचकर लाभ उठा सके।

एक प्रेमीः *मैं इन्सानी प्यार के बारे में आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। मैं अपनी जिंदगी में ऐसे बहुत से लोगों से मिला हूँ जिनके लिए मेरे दिल में बहुत गहरा प्यार पैदा हुआ है। क्या मैं उन लोगों से प्यार करके गुरु की सेवा कर सकता हूँ। अगर हम किसी व्यक्ति से प्यार करके उसके साथ अपने अंदर यह भी तड़फ रखें कि वह प्यार बहुत ही मधुर निर्दोष और पवित्र होगा तो क्या वह प्यार गुरु के प्यार को पाने का एक जरिया बन सकता है?*

बाबा जीः बड़ा दिलचस्प सवाल है इसका जवाब भी दिलचस्प ही होगा। हम मन के स्तर पर प्यार करते हैं इसलिए शुरु-शुरु में हमारे दिमाग में यह होता है कि हमारा प्यार सच्चा-सुच्चा और पवित्र रहेगा लेकिन कुछ दिनों के बाद वह तबदील हो जाता है। हम उस प्यार को विषयों की गंदगी में फँसा लेते हैं। उस प्यार से

आत्मा को निकालने में हमारे गुरु को मायूसी होती है क्योंकि हम प्यार को गंदा कर चुके होते हैं।

हिन्दुस्तान के बँटवारे के बाद चनाव पाकिस्तान में आ चुका है। चनाव में एक कुम्हार की लड़की का नाम सोहनी था। बलख बुखारा के बादशाह का लड़का इज्जतबेग हिन्दुस्तान में सैर के लिए आया। उसका सोहनी के साथ इतना प्यार हो गया कि उसने सोहनी को ही अपना दीन-ईमान समझ लिया। उस लड़के ने अपना घर-बार सब कुछ बर्बाद कर दिया। उन्होंने उस प्यार को शादी में तबदील नहीं किया बल्कि पक्का और पवित्र रखा।

सोहनी का पिता मिट्टी के बर्तनों का काम करता था। इज्जतबेग ने मिट्टी के बर्तन बेचने की दुकान खोली। सोहनी के घर जाने की खातिर वहाँ से बर्तन खरीदकर लाता और उन बर्तनों को कम पैसों में बेच देता या फकीरों को मुफ्त ही दे देता था ताकि वह दोबारा बर्तन खरीदने के बहाने सोहनी के घर जा सके और अपने सज्जन का मुख देख सके। जब उसका सब कुछ लुट गया तो वह सोहनी के घर भैसों को चराने वाला बन गया हालांकि वह एक बादशाह का लड़का था लेकिन उसे रोज सोहनी को देखने की चाह रहती थी। आखिर सोहनी के पिता ने उसे घर से निकाल दिया। वह दरिया पर झुग्गी डालकर बैठ गया।

वह रोजाना सोहनी के लिए मछली लेकर जाया करता था। एक दिन उसे मछली नहीं मिली क्योंकि दरिया में काफी चढ़ाव आया हुआ था। उसने सोचा कि मैं रोज मछलियों को मारता हूँ आज अपना माँस लेकर चला जाता हूँ। उसने अपनी जाँघ का माँस काटा जाँघ पर पट्टी बाँधी और घड़े पर तैरकर दरिया पार करके चला गया। उन दिनों आज की तरह बेड़ियाँ नहीं होती थी। सोहनी

ने उससे पूछा, ''सज्जना! आज तेरा मुँह पीला क्यों पड़ा हुआ है? आज तूँ जो माँस लेकर आया है यह मछली का नहीं मुझे इसका स्वाद कुछ और ही लग रहा है, मुझे सच बता।''

इज्जतबेग ने अपनी जाँघ से पट्टी खोलकर दिखा दी। सोहनी बेहोश होकर गिर पड़ी। फिर सोहनी ने कहा, आज तूने अपनी तरफ से पूरा प्यार निभा दिया है, पवित्र प्यार की खातिर कितने दुख झेले हैं। अब तू मुझे मिलने के लिए मत आना मैं तुझसे मिलने के लिए दरिया पार करके आया करूँगी।

सोहनी के माता-पिता ने सोहनी की मर्जी के खिलाफ किसी और लड़के से उसकी शादी कर दी। उसकी ननद हमेशा उसके खिलाफ रहती थी। ननद ने एक दिन दरिया के पास से पक्का घड़ा उठाकर उसकी जगह कच्चा घड़ा रख दिया। सोहनी को पता था कि इस कच्चे घड़े का साथ लेना मौत से कम नहीं। कच्चा घड़ा टूट गया और सोहनी डूबकर मर गई। इज्जतबेग (महिवाल) उसका वियोग न सह सका। वह भी उसी दरिया में छलाँग लगाकर खत्म हो गया। कहने का भाव कि वे दोनों उस दुनियावी प्यार को परमात्मा के प्यार में ढ़ालना चाहते थे।

दुनियावी प्यार का पता तब चलता है जब आँख खुलती है कि यह धोखा है इस प्यार को कम लोग ही समझते हैं। प्यार एक पुल की तरह होता है पुल तो पार करने का एक जरिया होता है। हमें इस प्यार से ऊपर उठकर गुरु के साथ सच्चा प्यार करना चाहिए। आज का इंसान पवित्र प्यार को समझने की कोशिश नहीं करता।

मुझे कई प्रेमी महीने में कितने-कितने पत्र डाल देते हैं। पहले पत्र में लिखते हैं कि हमारा प्यार भाई-बहन जैसा है। अगले दिन पत्र लिखते हैं कि अब हम शादी करने की सोच रहे हैं। आप जानते

हैं कि महीने में एक बार ही डाक का जवाब दिया जाता है। पत्र पढ़ते हुए पप्पू को भी समस्या हो जाती है कि वह मुझे कौन-सा पत्र पढ़कर सुनाए? पहले पत्र में तो भाई-बहन का रिश्ता लिखा होता है और दूसरे पत्र में शादी करने के बारे में सोच रहे होते हैं। जिसे ज़िंदगी में एक बार बहन बना लिया हो वह सारी ज़िंदगी बहन ही रहनी चाहिए। फिर उसके साथ इंसान शादी करने के लिए कैसे सोच सकता है?

वही प्रेमी: *मुझे आपसे एक बात और पूछनी चाहिए जो शायद दूसरे प्रेमियों के भी काम आएगी। मैं पाँच साल पहले यहाँ पर एक व्यक्ति से मिला जिसके लिए मेरे दिल के अंदर प्यार है लेकिन मैं यह भी बताना चाहूँगा कि मेरे अंदर इतनी पवित्रता नहीं है। उसके साथ-साथ हम जानते हैं कि हम निर्दोष नहीं है हमारा प्यार पवित्र नहीं है। क्या ऐसी हालत में हमें गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें उस व्यक्ति से अलग रहने का आर्शीवाद मिले, उससे बिछोड़ा मिले ताकि हमारा प्यार दुनियादारी का प्यार बनकर न रह जाए?*

बाबा जी: आपका दुनियावी सवाल है इसका रूहानियत के साथ कोई मतलब नहीं लेकिन आप इसे रूहानियत के साथ मिला रहे हैं। लड़कियों में भी यह आदत होती है अगर एक-दूसरे को भाई-बहन न कहे तो नज़दीक नहीं होते। धोखा देने के लिए हम बाहरी प्यार करते हैं। हमें मन के ऐसे धोखे से बचना चाहिए और सोच समझकर दुनियां में कदम रखना चाहिए। शादी करनी है तो बड़े शौक से करें। सन्तमत में किसी को शादी करने से रोका नहीं जाता लेकिन यह बुरी बात है कि पहले बहन-भाई बनाना बाद में उसके साथ अपना परिवार बनाना। यह बात सन्तमत के असूलों के खिलाफ है।

मैं कई बार सतसंग में गोपीचंद की कहानी सुनाया करता हूँ कि गोपीचन्द ने माता के आशीर्वाद से भक्ति मार्ग में पैर रखा। योगियों में यह रिवाज़ होता है कि आप जिस शहर के रहने वाले हैं सबसे पहले उस शहर से भिक्षा माँग कर लाएं। इससे आपका मन नीचा हो जाएगा आपमें अहंकार नहीं रहेगा। गोपीचंद भी अपने शहर में भिक्षा माँगने के लिए गया। वह सबसे पहले रानियों से भिक्षा माँगने गया। रानियों ने अपना हार-श्रृंगार उतारकर गोपीचंद को दे दिया कि जब पति ही नहीं रहा तो हार श्रृंगार करके किसे दिखाना है।

फिर गोपीचन्द अपनी माता के पास गया। माता ने कहा कि मैं तुझे शिक्षा तो नहीं दे सकती क्योंकि मैं गृहस्थी हूँ और तू त्यागी है लेकिन भिक्षा में जो चाहूँ तुझे दे सकती हूँ। मेरी भिक्षा यह है कि तूने नरम से नरम गद्दों पर सोना है, मजबूत किले में रहना है और अच्छे से अच्छा खाना खाना है। गोपीचन्द ने कहा, ''माता अगर कोई और औरत यह बात कहती तो मैं कहता कि यह पागल है लेकिन मैं तो तेरे वचनों से योगी हुआ हूँ। मैंने राज्य छोड़ा है। अब तो मैंने जंगलों में रहना है वहाँ नरम गद्दे कहाँ? रोटियाँ माँगकर लानी है वहाँ अच्छे खाने कहाँ? पेड़ों के नीचे सोना है वहाँ मजबूत किले कहाँ?''

माता ने कहा कि बेटा तू समझा नहीं। जब तक भूख न लगे तू खाना मत खाना, भूख लगी हो तो चाहे दो दिन का बासी खाना भी क्यों न मिले वह भी पुलाव और जलेबियों जैसा लगता है। जब तक नींद तुझे गिरा न दे तू सोना मत फिर ऐसी नींद आएगी जैसे तुम मखमल के गद्दों पर सो रहे हो।

नींद न माँगे खाट।

गुरु की शरण मजबूत किला है। हमेशा अपने आपको गुरु की शरण में रखना है। तू राज्य छोड़कर योगी हुआ है तू जवान है। तेरे पास बूढ़ी औरतों ने भी आना है और जवान औरतों ने भी आना है अगर तू अपने आपको गुरु की शरण में नहीं रखेगा तो यह तुझे गिरा लेंगी, ठग लेंगी। इसलिए हमें हमेशा गुरु की शरण में रहना चाहिए अपने गुरु को आँखों के आगे रखना चाहिए।

एक प्रेमी: *इटली के आश्रम में जब माता मिली आई तो हम सबने मिलकर अभ्यास किया। अभ्यास के बाद माता मिली ने हमसे पूछा कि हमारा अभ्यास कैसा रहा? उस समय मुझे समझ नहीं आया कि मैं क्या जवाब दूँ? मैंने अभ्यास में तजुर्बा किया कि मैंने अपने आपको एक ऐसी जगह पर पाया जहाँ पर बहुत से और भी लोग थे जो बहुत पेरशान और दुखी थे, ऊँची-ऊँची साँसे ले रहे थे। मेरे ख्याल से वह नर्क जैसी कोई जगह थी? मैं यह नहीं बता सकी कि वह मेरा अच्छा अभ्यास था या बुरा?*

बाबा जी: मैं आमतौर पर बताया करता हूँ कि आप ऐसे सवाल उस समय पूछें जब आप इंटरव्यू में आते हैं। अभ्यास के बारे में सबके बीच जवाब देना मुनासिब नहीं होता।

एक प्रेमी: *अगर कोई सेवक सन्तमत में नामलेवा है वह एक गुरु को छोड़कर दूसरे सन्तमत के गुरु के पास जाता है तो उसके लिए कौन सा गुरु जिम्मेवार होगा?*

बाबा जी: यह बात बड़ी सोचने और समझने वाली बात है। पूरा गुरु हमेशा जिम्मेवार होता है। अधूरे गुरु की क्या जिम्मेवारी हो सकती है? अधूरा गुरु तो मन-इंद्रियों का गुलाम है। इस बारे में महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

अन्धा गुरु अन्धा चेला, नर्का नर्कीं धक्कम धकेला ।

अधूरा गुरु नर्कों में ले जाने का जिम्मेवार तो है लेकिन आत्मा को संभालने का जिम्मेवार नहीं, अगर हम पूरे गुरु को छोड़कर अधूरे के पास जाते हैं तो हम अपनी आत्मा से साथ बहुत बड़ा घात कर रहे होते हैं, अगर अधूरे गुरु को छोड़कर पूरे गुरु के पास जाते हैं तो अपनी आत्मा से बहुत पापों का बोझ उतार रहे होते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

काचे गुरु को छोड़ो यह भी पाप कटा।

***

आज खुशी दिन आया जी, मनाया संगतां ने, *(2)*

1. *अविचल नगर गोबिंद गुरु का, नाम जपत सुख पाया जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....
2. *मन इच्छे से ही फल पाऐ,करते आप वसाया जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....
3. *आप वसाया सर्व सुख पाया, पुत भाई सिक्ख बिगासे जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....
4. *गुण गावे पूरण परमेश्वर, कारज आया रासे जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....
5. *आप स्वामी आपे राखा, आप पिता आप माया जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....
6. *कहो 'नानक' सतगुरु बलिहारी,जिन ऐहो थान सुहाया जी,* *(2)*
   मनाया संगतां ने .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

नाम का जहाज

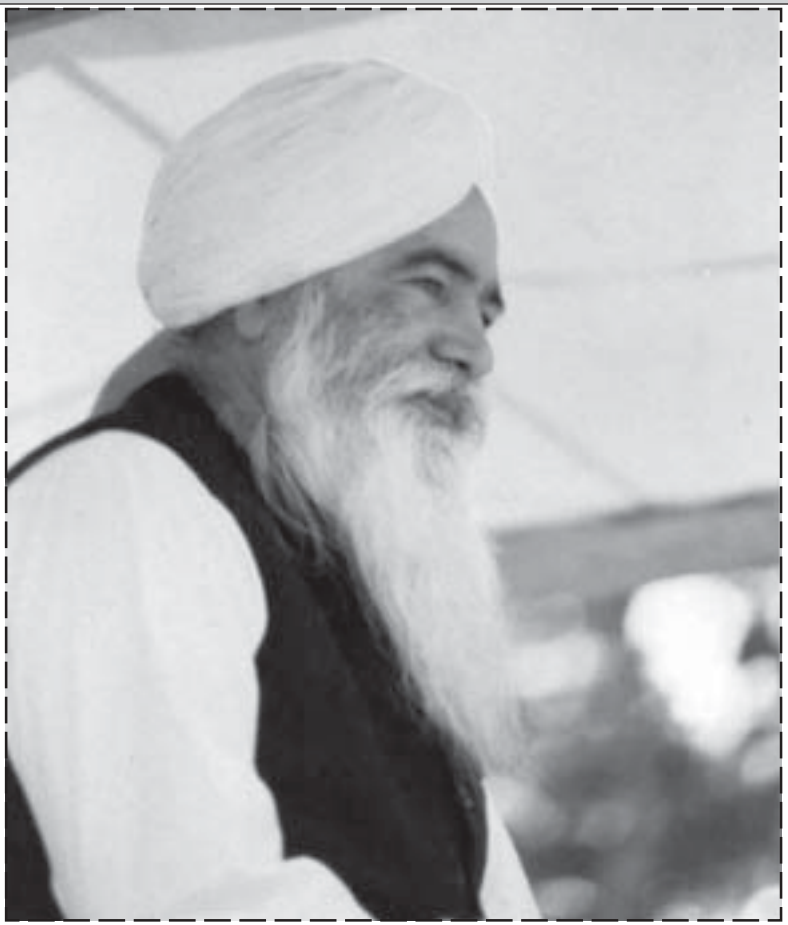

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम गरीब आत्माओं पर अपनी दया बरसाई और हमें अपनी भक्ति का दान दिया।

प्यारेयो! गुरु और शिष्य के रिश्ते को लफ्जों में बयान नहीं किया जा सकता, इस रिश्ते को हमारी आत्मा ही समझती है कि

गुरु और शिष्य का रिश्ता कितना गहरा और मजबूत है? गुरु शब्द-रूप होकर हमारे अंदर बैठा है वह हमारी भक्ति और विश्वास के बारे में जानता है कि हममें क्या गुण हैं; वह यह भी जानता है कि हमें कितना देना है और हम कितना संभालकर रख सकते हैं।

जो प्रेमी अपने शरीर को नौं द्वारो से खाली करके आँखों के बीच तीसरे तिल पर टिकाकर गहरी समाधि में पहुँच जाते हैं, वे दुनिया का सहारा छोड़कर सिर्फ गुरु का ही आसरा रखते हैं। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर पूरी तरह से गुरु के होकर अंदर जाएं।

ऐसे शिष्य की किस्मत का लेखा-जोखा गुरु खुद लिखता है। ऐसे शिष्य पर गरीबी, बीमारी, मुसीबतें आने पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसे शिष्य की चाहे कोई तारीफ करे! चाहे कोई निन्दा करे! चाहे कोई उसका अपमान करे! उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह इन चीजो की तरफ ध्यान नहीं देता क्योंकि उसका सारा ध्यान अपने गुरु की तरफ होता है ऐसे शिष्य की किस्मत गुरु लिखते है और उसका ध्यान भी गुरु ही करते हैं।

ऐसा शिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता है, हमें 'नामदान' देता है। वह हमें उस परम पिता परमात्मा के साथ जोड़ता है और दिन-रात अपने गुरु के आगे यह प्रार्थना करता है, ''सिर्फ आप ही आत्माओं के रक्षक हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे गुरुदेव! मैंने आप पर भरोसा करके यह परिवार बनाकर संगत को **नाम के जहाज** पर बिठाया है। अब यह सब आपके हाथ में है कि आप इन्हें कैसे मुक्ति दिलाएंगे! चाहे आप इनसे भजन-अभ्यास करवाएं! चाहे इन्हें ऐसे

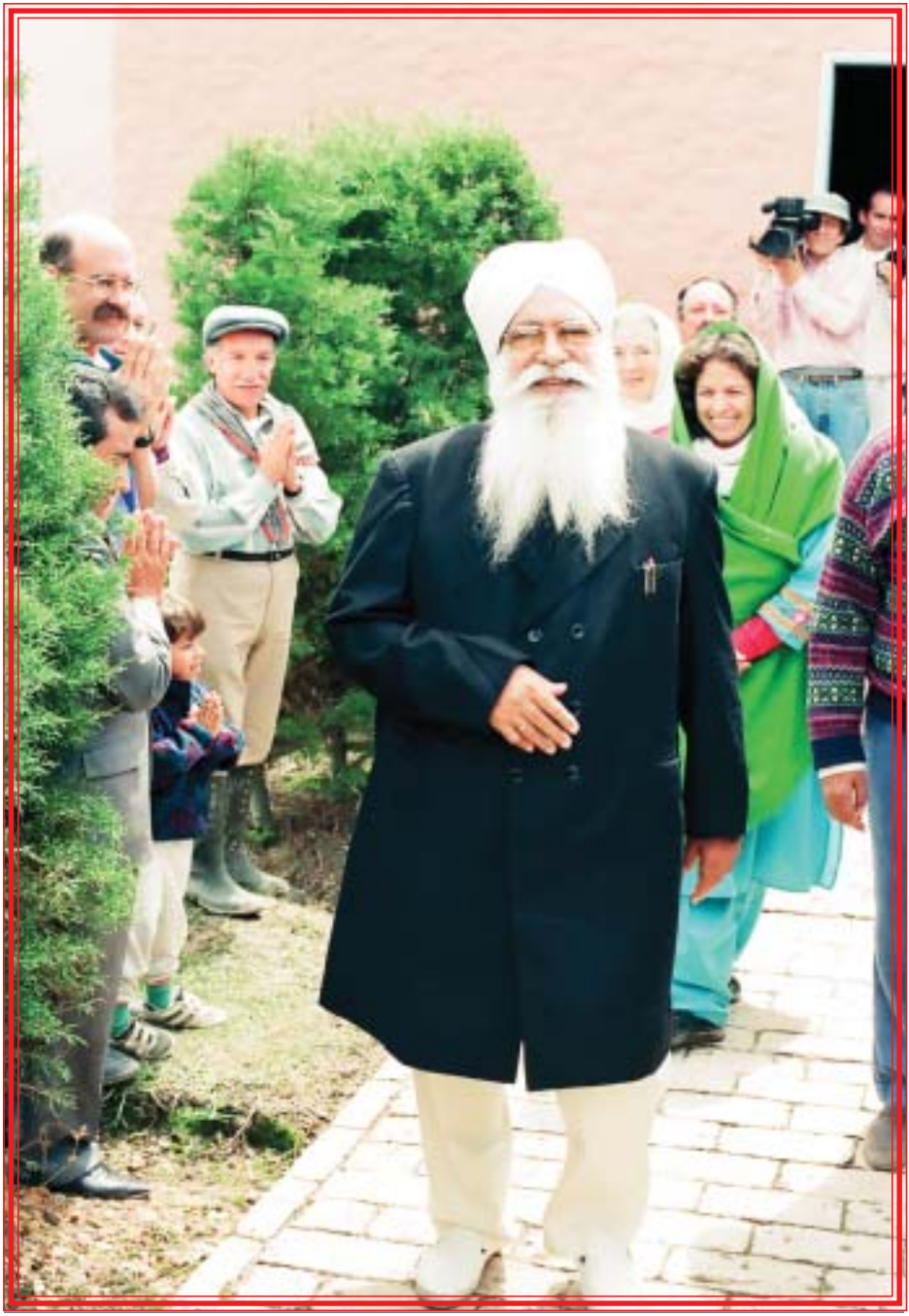

ही ले जाएं लेकिन मैंने सिर्फ आपके विश्वास पर ही इन सबको **नाम के जहाज** पर बिठाया है।

परमपिता परमात्मा ने खुद इस **नाम के जहाज** की रचना की है और परमात्मा ने यह जहाज अपने प्यारे सन्तों को दिया है। जो प्रेमी पक्के इरादे से अपने गुरु के ऊपर भरोसा रखकर इस **नाम के जहाज** पर चढ़ते हैं वे आसानी से पार हो जाते हैं लेकिन जो इस जहाज को बिना भरोसे के पकड़ने की कोशिश करते हैं वे जीवन के समुद्र में डूब जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर शिष्य अपने अंदर तड़प पैदा करता है और गुरु की तरफ एक कदम बढ़ाता है तो गुरु हजारों कदम चलकर आता है और शिष्य की संभाल करता है।''

***

धन्य अजायब

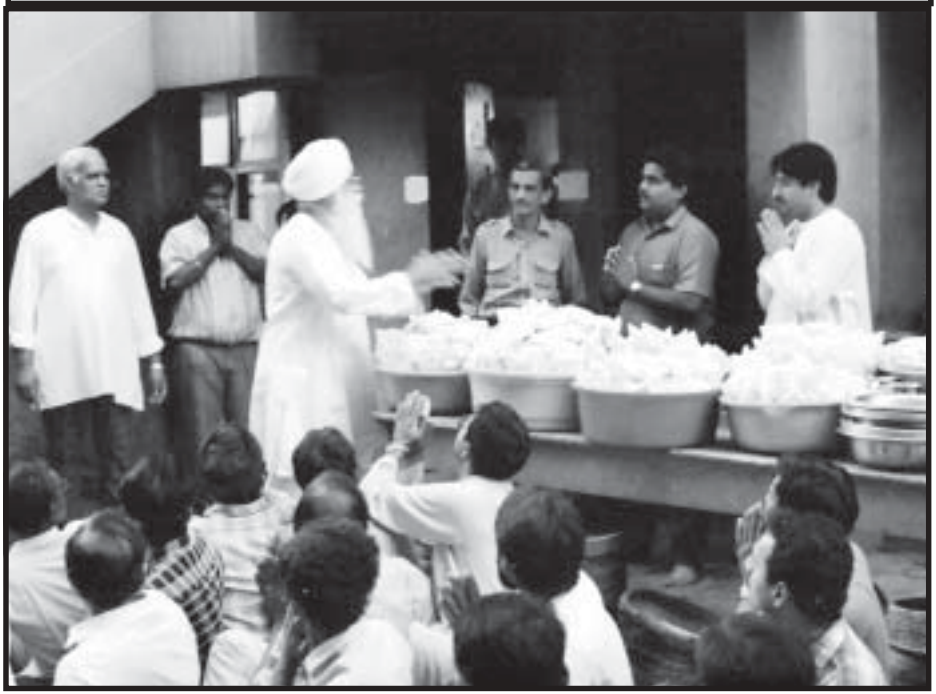

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से 16 पी.एस. आश्रम में सतसंगो का कार्यक्रम इस प्रकार है:

26, 27, 28 अक्टूबर 2012

23, 24, 25 नवम्बर 2012

28, 29, 30 दिसम्बर 2012